

आर्यधर्म पुं. (तत्.) 1. कुलीन, श्रेष्ठ, सम्माननीय जनों द्वारा अनुपालित धर्म 2. सदाचार।

आर्यपुत्र पुं. (तत्.) दे. आर्य, 1. पति (के लिए आदरसूचक शब्द) 2. आदरणीय व्यक्ति का पुत्र 3. राजकुमार।

आर्यभट्ट पुं. (तत्.) ज्योतिषशास्त्र और खगोलशास्त्र के एक प्राचीन विद्वान, जिन्होंने भारत में बीजगणित का प्रयोग किया था।

आर्यभाव पुं. (तत्.) सदाचार, शिष्टाचार, सम्मानजनक भाव या आचरण।

आर्यभाषाएँ वि. (तत्.) भाषा. योरोपीय तथा भारत-ईरानी समूह की भाषाएँ।

आर्यमिश्र वि.पुं. (तत्.) 1. पूज्य, माननीय 2. विद्वान।

आर्यवृत्त वि. (तत्.) आर्य अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्ति की भाँति व्यवहार करने वाला, सदाचारी धार्मिक पुं. आर्यों जैसा आचरण या चरित्र।

आर्यसत्य पुं. (तत्.) महान सत्य, बौद्ध धर्म के चार सिद्धांत जो उसके आधारभूत स्तंभ माने जाते हैं जैसे- 1. जीवन दुःखमय है 2. जीवनेच्छा दुःख का कारण है 3. इच्छा की निवृत्ति दुःख की निवृत्ति है 4. अष्टमार्ग निर्वाण की ओर ले जाता है।

आर्यसमाज पुं. (तत्.) सनातन हिंदू धर्म में व्याप्त मूर्तिपूजा (तथाकथित) अंधविश्वास एवं कुरीतियों में सुधार के लिए स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित धार्मिक-सामाजिक संस्था।

आर्यसमाजी वि. (तत्.) आर्यसमाज का अनुयायी या उसके सिद्धांतों को मानने वाला।

आर्यसिद्धांत पुं. (तत्.) आर्य भट्ट की कृति का नाम।

आर्या स्त्री. (तत्.) 1. पार्वती 2. सास 3. दादी, पितामही 4. बड़ी महिलाओं के लिए सम्मानसूचक संबोधन 5. एक मात्रिक छंद जिसके पहले और तीसरे चरण में बारह-बारह, दूसरे में 18 और चौथे में 15 मात्राएँ होती हैं।

आर्यागीत स्त्री. (तत्.) आर्या छंद का एक भेद जिसके प्रथम तथा तृतीय चरण में 12 तथा द्वितीय-चतुर्थ चरण में 20 मात्राएँ होती हैं।

आर्यावर्त पुं. (तत्.) मध्य और उत्तर भारत जो विध्यांचल से हिमालय और पश्चिमी समुद्र से पूर्वी समुद्र तक फैला हुआ है।

आर्यावर्तीय वि. (तत्.) आर्यावर्त का निवासी, भारत का प्राचीन नाम-आर्यावर्त है।

आर्यिका स्त्री. (तत्.) 1. आदरणीय महिला 2. सास 3. कुलीन, सदाचारिणी 4. एक नक्षत्र का नाम।

आर्येतर पुं. (तत्.) जो आर्य न हो, अनार्य।

आर्येतर भाषाएँ स्त्री. (तत्.) भाषा. (भारत के संदर्भ में) वे भाषाएँ जो आर्य भाषा उपपरिवार की नहीं हैं उदा. तमिल, मिजो, खासी आदि non-aryan

आर्योचित वि. (तत्.) [आर्य+उचित] आर्य के लिए उचित, आर्य के योग्य, शोभाकारक।

आर्योपनिवेश पुं. (तत्.) ऐसा स्थान, जहाँ आर्य रहते हैं, श्रेष्ठ व्यक्तियों का प्रदेश, सभ्य और शिष्ट निवासियों का क्षेत्र।

आर्ष पुं. (तत्.) 1. ऋषि संबंधी 2. ऋषिप्रणीत 3. वैदिक 4. ऋषियों द्वारा मान्य उदा. आर्षग्रंथ, आर्ष प्रयोग, आर्षविवाह।

आर्षग्रंथ पुं. (तत्.) ऋषियों, मुनियों आदि द्वारा रचित प्रामाणिक ग्रंथ।

आर्षप्रयोग पुं. (तत्.) शब्दों का वह व्यवहार जो पाणिनि व्याकरण के नियम के तो विरुद्ध हो किंतु जिनका प्रयोग पूर्व-प्रतिष्ठित रचयिताओं ने किया हो, ऐसे प्रयोगों को व्याकरण-विरुद्ध न कह कर आर्ष कह दिया जाता है पर्या. अपाणिनीय प्रयोग।

आर्षभ वि. (तत्.) 1. ऋषभ गोत्र में उत्पन्न, ऋषभ का वंशज 2. साँड से उत्पन्न।

आर्षभि पुं. (तत्.) ऋषभ का वंशज, भारत के प्रथम चक्रवर्ती सम्राट भरत का एक नाम।